ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 198-202
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

कुमाऊँ के ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड – 19 महामारी का प्रभाव

1. बबीता टम्टा
2. प्रो0 इला साह

1. शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशिका– समाजशास्त्र विभाग, साबेन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड), भारत

Received-15.06.2024, Revised-23.06.2024, Accepted-29.06.2024 E-mail: aaryavart2013@gmail.com

सारांशः ***एक वैश्विक महामारी के रूप में कोविड – 19 ने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक चुनौती खड़ी कर दी। 2019 के मध्य दिसम्बर से इसकी शुरूआत चीन के वुहान शहर से मानी गयी और धीरे – धीरे यह पूरे विश्व में फैल गयी। 30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सामाजिक स्वास्थ्य इमरजेन्सी घोषित किया जो राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय चिन्ता का कारण बनी।***

उत्तराखण्ड में 15 मार्च 2020 को देहरादून में कोरोना संक्रमण का पहला मरीज पाया गया और इसमें धीरे–धीरे सम्पूर्ण उत्तराखण्ड को भी अपनी चपेट में ले लिया गॉव हो या शहर सभी जगह इसकी दहशत संक्रमण की पीड़ा व जनहानी जैसी घटनाओं में वृद्धि होने लगी। रोजगार छिन जाने से लोग अपने गॉवो को लौटने लगे। कहीं इनकी वापसी को सहज तो कही असहज महसूस किया गया और इस कारण इनमें विभिन्न प्रकार के प्रभाव परिलिक्षित हुए जो सकारात्मक/नकारात्मक दोनो रहें।

चयनित क्षेत्र में कोविड–19 से उत्पन्न स्थितियों के आधार पर दर्शाने का प्रयास किया गया की उनकों जीवन में उक्त अवधि में किस प्रकार का संघर्ष करना पड़ा और उन पर उसका प्रभाव पड़ा।

कुंजीभूत शब्द– कोविड, महामारी ,लॉकडाउन, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ, इमरजेन्सी, सकारात्मक, नकारात्मक, संक्रमण।

प्रस्तुत शोध पत्र का उददेश्य कोविड–19 महामारी से उत्पन्न प्रभावों का अध्ययन करना है, इसके लिए जनपद अल्मोड़ा के हवालबाग ब्लॉक में स्थित महत गॉव को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है। कोविड–19 महामारी एक वैश्विक महामारी के रूप में 2019 में मध्य दिसम्बर माह में चीन के बुहान प्रान्त से प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण विश्व में तीव्रता से फैलती गयी। बुखार, थकान, नाक बन्द होना, गले की खराबी, सॉस लेने में कठिनाई जैसे अनेक संक्रमण इसकी पहचान के रूप में रहे लेकिन इससे पीड़ित लोगो के निरन्तर बढ़ती मृत्युदर से यह एक गंभीर वैश्विक महामारी के रूप में घोषित कर दी गयी। इसकी संवेदनशीलता व गम्भीरता को देखते हुए 30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वायरस आउट बैंक को, सामाजिक स्वास्थ इमरजेन्सी घोषित कर दिया, क्योंकि इस वायरस की तीव्रता से फैलने की पुष्टि इसी दिन हुई।

कोविड–19 महामारी का प्रभाव सभी जगह देखा गया। इसने मानवमस्तिष्क पर अपना मनोवैज्ञानिक ऐसा प्रभाव डाला कि चारों और दहशत, तनाव, घबराहट का माहोल उत्पन्न हो गया इस वैश्विक संकट में मानव जीवन बचाना एक जटिल कार्य हो गया। इसे 2020 का सबसे खराब समय कहा जा सकता है। वैज्ञानिक का मानना था कि प्लेग हैजा, जैसी अनेक महामारियॉ पूर्व में भी आयी लेकिन उनका उपचारध्उपाय वैज्ञानिको के पास था लेकिन इसके नये–नये वैरियन्टो के उत्पन्न होने से विशेषज्ञो के प्रयत्न भी मौतो को बचा पाने में स्वयं को असमर्थ महसूस कर रहे थे।

भारत में इस महामारी की दस्तक 30 जनवरी को केरल राज्य से हुई जहॉ कोविड का पहला मामला दर्ज किया गया और निरन्तर इसकी संख्या में वृद्धि होती गयी । भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 28 जून 2020 तक इस वायरस से भारत में 3,37,66,707 मामलो की पुष्टि की जससे 4,48,339 लोगो की मृत्यु हुई।

उत्तराखण्ड में इस वैश्विक महामारी की पुष्टि 15 मार्च 2020 को हुई और अन्य क्षेत्रों की तरह यहॉ भी इसका प्रकोप तीव्रता से बढ़ता गया। जनपद अल्मोड़ा में 6 अप्रैल 2020 को रानीखेत में पहला मामला दर्ज हुआ। सरकार द्वारा इस महामारी से बचने के लिए लॉकडाउन की प्रक्रिया को सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार मानकर लोगो को घरों में कैद रहने के लिए मजबूर कर दिया। सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र ध्वस्त हो गया, आर्थिक अनिश्चितता का संकट खड़ा हो गया। विश्व का एक बड़ा हिस्सा बेरोजगारी के कारण घरो में रहने के लिए मजबूर हो गया और जीवन शैली पूर्ण रूप से प्रभावित हो गयी।

समस्त क्षेत्रों की जगह कुमाऊँ का ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अधिक प्रभावित रहा। यहॉं का प्रमुख व्यवसाय कृषि व पशुपालन पर आधारित है, वर्तमान बढ़ती आवश्यक्ताओं के कारण इनका जन–जीवन मात्र कृषि पर चल पाना कठिन है, अतः ये ग्रामीण रोजी–रोटी की तलाश में छोटी–मोटी नौकरियों के लिए अपने ग्रहजनपद से पलायन कर आर्थिक सहयोग देकर पारिवारिक व्यवस्था को संचालित करते है। लेकिन इस महामारी के कारण लॉकडाउन ने उन्हें पुनः गृहजनपद लौटने के किए बाध्य कर दिया क्योंकि समस्त पर्यटन, होटल, उद्योग बन्द होने से उन्हें नौकरी से हटा दिया गया और दहशत घबराहट व पारिवारिक चिन्ता के कारण उनके समक्ष अन्य कोई विकल्प नही बचा।

परिभाषा–

1–डिक्शनरी डॉटकाम 2019 से स्पष्ट किया गया है– करोनावायरस रोग 2019 एक संभावित रूप से गंभीर मुख्य रूप से एक कोरोनावायरस के कारण होने वाली सांस की की बिमारी और बुखार, खॉसी और सॉस की तकलीफ की विशेषता है। कुछ लोगो में यह रोग हृदय या गुर्दे जैसे प्रमुख अंगो को भी नुकसान पहुचाता है।

2–जॉन होपकिन्स 2019 के अनुसार – कोरोनावायरस इस प्रकार का वायरस है। कई अलग–अलग प्रकार है, और कुछ रोग का कारण बनते है। 2019 में कोरोनावायरस, SARS-COV-2 ने सास की बीमारी की महामारी का कारण बना। जैसे COVID-19 कहा जाता है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

कोविड–19 विषय पर इसके प्रारम्भ होने से वर्तमान तक विभिन्न विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति, उत्पन्न समस्याओं, प्रभाव, परिणाम व जागरूकता को अपने अध्ययनो से प्रस्तुत किया है।

साहित्य सर्वेक्षण–

1– टेकेनिका एवं गेस्पर (Tacaenata & Gaspar, 2020) – ने में कोविड महामारी में स्पष्ट करते हुए आर्थिक व्यवस्थाओं में इसके प्रभाव को बतलाते हुआ लिखा है कि, कोविड–19 महामारी ने दुनिया भर की अर्थव्यवस्था ने विनाशकारी प्रभाव डाला है। ऐशियाई विकास बैंक का अनुदान है कि एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्र में नौकरियों में कमी वेतन को कम कर रही है जिससे प्रवासी श्रमिक सर्वाधिक प्रभावित है।

2– गुडन्मो0 एल0 (Guadango I. 2020)– के अनुसार इस कोविड–19 वैश्विक महामारी से लड़ने के लिए हमारी वैश्विकृत दुनिया के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक ताने बाने में प्रवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस परिस्थितियों में सब साथ होने का दृष्टिकोण ही स्वास्थ्य व कल्याण में मदद कर सकता है, व भविष्य के संकट को कम भी।

3– राम भगत (Bhagat Ram 2020)– के अनुसार अपने शोधपत्र के आधार पर स्पष्ट किया है कि यह एक ऐसी वैश्विक महामारी है जिसने प्रवासियों को भोजन की कमी बुनियादी सुविधाओं के अभाव, स्वास्थ्य असुरक्षा, आर्थिक तनाव तथा मनोविज्ञान सहायता की कमी जैसी चुनौतियो का समाना करना पड़ा।

4– नलीनी गुलाठी (2020)– ने अपने आलेख कोविड व घरेलू हिंसा में लिखा है कि कोविड–19 द्वारा पैदा हुए मौजूदा घरेलू हिंसा से पीड़ित की स्थिति को बिगाड़ सकता है उन्होने उन सम्भावित कदमों पर चर्चा की है जिसे सरकार और नागरिक समाज संस्थाओं को इस समस्या का समाधान करने के लिए तुरन्त उठाना चाहिए।

5– उपासक दास (2021)– ने अपने आलेख क्या कोविड–19 के बढ़ते प्रसार में सामाजिक और आर्थिक विविधता मामने रखती है। मैं स्पष्ट किया है कि कोविड– 19 का टीका उपलब्ध होने के बावजूद आज भी संक्रमण को रोकने के लिये स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा अनुशासित सामाजिक दूरी का पालन किया जाना अनिवार्य है।

सामाजिक दूरी संबंधी नियमों का उल्लघंन करने से पूरा समुदाय इसकी चपेट में आ सकता है और इससे सरकारी प्रयास कमजोर हो सकते है।

6– डा0 टड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस (2021)– ने अपने आलेख में लिखा कि कोविड– 19 महामारी के खिलाफ लड़ाई के साथ–साथ एक ''इन्फोडेमिक'' के खिलाफ लड़ाई भी शामिल थी। डब्ल्यू0एच0ओ0 एवं अन्य संगठनो द्वारा इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई पहल की गई।

7– साह इला एवं जोशी ललित (2021)– ने अपनी पुस्तक कोविड–19 समाज एवं मीडिया में इसके प्रभावो का उल्लेख करते हुए लिखा है "कोविड–19 के कारण सम्पूर्ण सामाजिक ताना–बाना बिखर गया, मंदी के दौर चलने से आर्थिक व्यवस्थाएॅ ध्वस्त हो चुकी है। इस महामारी में हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में नकारात्मक प्रभाव डाला है,

अतः ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रभाव को जानना शोध पत्र की प्राथमिकता है।

उद्देश्य : प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड–19 से उत्पन्न प्रभावों को जानना (सकारात्मक ध्नकारात्मक)
2. प्रभावों से उत्पन्न परिणामों को स्पष्ट करना

अध्ययन क्षेत्र– जनपद अल्मोड़ा के 11 ब्लाको में हवालबाग सबसे बड़ा है जिसमें 11 वार्ड सम्मिलित है। ये जनपद का एक समुदायिक विकासखण्ड हैं 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 72613 है। जिसमें 30,323 पुरूष व 37,290 महिलाये सम्मिलित हैं, यहा 610 न्याय पंचायते 126 ग्राम पंचायते तथा 15787 परिवार निवासित है।

शोध अभिकल्प व पद्धतिशास्त्र– प्रस्तुत अध्ययन ब्लॉक हवालबाग के महता गॉव के ग्रामीणो पर आधारित है। इस गॉव की कुल जनसंख्या 561 है।

अध्याय हेतु अनवेषणात्मक व वर्णात्मिक शोध अभिकल्प का प्रयोग कर कोविड–19 के प्रभावों को जानकर इनका वर्णन प्रस्तुत किया गया है, प्रभाव को जानने के लिए प्राथमिक तथ्यों के आधार पर स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक तथ्यों के रूप में किये गये अध्ययन वेबसाइट, शोध पत्रों व संबंधित साहित्य को प्रयोग में लाया गया है।

निदर्श का चयन– महत गॉव की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 579 है। इससे 307 महिलाए व 272 पुरूष सम्मिलित है, तथा परिवारो की कुल संख्या 140 है।

शोध की वैज्ञानिकता व पारदर्शिता के लिए महत गांव में निवासित 140 परिवारो में से 25 प्रतिशत परिवारों को दैव निदर्शन की लॉटरी पद्यति के माध्यम से चुना गया जिनकी संख्या 35 है। इन 35 परिवारों के मुखियाओं से ग्रामीण क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों को प्राप्त किया गया ।

जिनका आयु वर्ग के लिए 35 वर्ष से लेकर 50 वर्ष के ऊपर तक के मुखियाओं को सम्मिलित किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र के लिए महत गॉव के 35 परिवारों के मुखियाओं को किया गया ये महिलाध्पुरूष दोनो है।

सर्वप्रथम जानने का प्रयास किया गया कि कोविड–19 महामारी से इनके परिवार प्रभावित हुए तथ्य निम्नवत पाये गये।

परिवार में कोविड–19 के प्रभाव संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 01

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	नही	00	–
2	थोड़ा बहुत	13	37.15
2	बहुत अधिक	21	60.00
4	तटस्था	01	2.85
5	योग	35	100

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर चयनित सभी परिवारों ने काविड–19 वैश्विक महामारी के प्रभाव को अपने परिवार में होना स्वीकार किया क्योंकि प्राप्त ऑकड़ो में नही का प्रतिशत शून्य है जबकि 37.15 प्रतिशत परिवारो ने इस प्रभाव को थोड़ा बहुत 60.00 प्रतिशत ने बहुत अधिक होना बतलाया हैं जबकि 2.85 प्रतिशत उत्तरदाता तटस्थ रूप में पाये गये।

कोविड–19 वैश्विक महामारी में प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है लेकिन ये ग्रामीण अपने क्षेत्र से पलायन कर छोटी–छोटी नौकरयिा से पारिवारिक आर्थिक स्थिति का संचालन कर रहे थे और सबसे अधिक मार इनकी रोजी–रोटी पर पड़ी जब इनका रोजगार लॉकडाउन के कारण छिन गया।

चयनित उत्तरदाताओं के रोजगार की ििस्थति का मूल्यांकन करने से प्राप्त तथ्य निम्नवत् हैं।

उत्तरदाताओं के रोजगार पर प्रभाव से सम्बंधित तथ्य

सारणी संख्या–02

क्र0सं0	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	रोजगार छिन गया वापस नही बुलाया	31	88.58
2	कोविड–19 के समय समाप्त वर्तमान में पुनः लागू	04	11.42
3	**योग**	**35**	**100**

प्राप्त तथ्यों में सर्वाधिक 88.58 उत्तरदाताओं ने स्वयं का रोजगार पूर्ण रूप से छिन जाना तो मात्र 11.42 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोविड–19 के समय रोजगार का समाप्त होना लेकिन परिस्थितियॉ सामान्य होने पर पुनः घर के रोजगार में संलग्न लोगो को वापस बुलाने की बात कही। अर्थात अधिकांश लोगो के रोजगार समाप्त होने से नकारात्मक के प्रभाव परिलक्षित होते है।

रिवर्स पलायन कर आये हुए ग्रामीणों के समक्ष सामंजस्यता की समस्या का उत्पन्न होना स्वभाविक है चाहे वे परिवार में हो, आर्थिक क्षेत्र में या अन्य, अतः उत्तरदाताओं से जानने का प्रयास किया गया कि घर वापसी पर क्या उन्हें परिवारध्समाज में सामजस्यता की प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करना पड़ा तथ्य निम्नवत है।

सामंजस्यता की स्थिति की समस्या सबन्धित तथ्य

सारणी संख्या – 03

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	21	60
2	नही	06	17.14
3	थोड़ा बहुत	03	8.57
4	बहुत अधिक	05	14.29
5	योग	35	100

उपरोक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि घर वापसी अर्थात रोजगार छिन जाने की अवस्था में प्रत्यक्षध्अप्रत्यक्ष रूप से अधिकांश लोगो ने सामंजस्यता की स्थिति में कम या अधिक मात्रा में सामंजस्यता की स्थिति में समस्या को बहुत अधिक रूप में स्वीकार किया 60 ने हॉ 17.14 थोड़ा बहुत तथा 8.57 इस समस्या को बहुत अधिक रूप में स्वीकार किया जबकि मात्रा 14.29 लोगो न सामंजस्यता में किसी भी प्रकार की समस्या को अस्वीकार किया है।

कोविड–19 ने प्रत्येक परिवार को थोड़ा या बहुत रूप में अदृश्य प्रभावित किया। कई परिवारों में जनहानि भी उक्त समय में होने के आकड़े प्राप्त हुए। संबंध में उत्तदाताओं से प्राप्त तथ्य निम्नवत हैं

कोविड–19 से परिवार में स्वास्थ्य व जनहानि संबंधी तथ्य

सारणी संख्या–04

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवर्ती	प्रतिशत
1	प्रभावित हुए	29	82.86
2	नहीं हुए	4	11.43
3	जनहानि हुई	02	5.71
4	योग	35	100

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

प्राप्त तथ्यों ने कोविड– 19 के प्रभाव को सर्वाधिक 11.43 लोगों द्वारा स्वीकार किया गया है 82.86 ने अस्वीकार जब 5.71 परिवार में अपनो को खोने अर्थात जनहानी संबंधी विचारों की अभिव्यक्ति की।

प्रभावित लोगो ने दहशत के कारण घर पर ही इलाज कराने की बात कही है इनका प्रतिशत 31.42 है। जबकि 51.42 प्रतिशत लोगो ने अस्पताल में इलाज कराते हुए घर की बात को बतलाया।

कोरोना ने वह कर दिखाया जिससे निजात पाना इन्सान असंभव सा समझने लगा था, सड़के वीरान हो गयी पारस्परिक सम्पर्क टूट गये सेनीटाइजर साबुन का प्रयोग जीवन की अनिर्वायता बन गयी संक्रमण फैलन की दहशत, घर में कैद रहना जैसी घटनाऍ व्यक्ति के जीवन का अंग बन गया । लेकिन चयनित उत्तरदाताओं ने बतलाया कि गॉव में इतनी जटिलता नही थी। पारस्परिक समीपता अर्थात एक–दूसरे के घर जाने का सिलसिला पूर्ववत ही पाया गया। तथ्य निम्नवत हैं।

पारस्परिक समीपता (रिश्तेदारों से मिलने की) से सम्बन्धित तथ्य

सारणी संख्या – 05

क0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवर्ती	प्रतिशत
1	पूर्ववत रही	27	77.15
2	पहले से कम	06	17.14
3	तटस्थ	02	5.71
4	योग	35	100

इस महामारी के कारण ग्रामीण जनसंख्या के अधिकांश लोग जहॉ बेरोजगारी का दशं झेल रहे थे वही उनके बच्चों की शिक्षा भी प्रभावित हो रही थी। जो लोग रिवर्स पलायन कर आये थे उनके बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से प्रत्यक्षध्अप्रत्यक्ष रूप से क्रम या अधिक मात्रा में इसका प्रयोग आता था लेकिन गांव में पढ़ने वाले बच्चों के पास न ऑनलाइन की सुविधा थी न साधन और न अनुभव इसलिए उनके पारिवारिक जनों ने ऑनलाइन शिक्षा से आने वाली परेशानियों को स्वीकार कर अपने विचार निम्नवत रखे–

ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों के प्रभावित होने सम्बन्धी तथ्य

सारणी संख्या 06

क0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवर्ती	प्रतिशत
1	हॉ	6	17.14
2	नही	7	20
3	थोड़ बहुत	13	37.14
4	बहुत अधिक	9	25.72
5	योग	35	100

लेकिन इसके साथ ही लोगों ने इसके सकारात्मक प्रभाव संबंधी विचारो को भी अभिव्यक्त किया है जैसे– परिवार विभिन्न सकारात्मक प्रभावों को भी ग्रामीणों द्वारा अनुभव किया गया अधिकांश 54.28 प्रतिशत लोगो ने स्पष्ट किया कि मानसिक, शारीरिक तनाव के पश्चात भी अपने घर पहुचने पर उन्हे तुरन्त मानसिक शान्ति प्राप्त हुई, 65.71 प्रतिशत का कहना है कि कोविड–19 के दौरान संयुक्त परिवार की महत्ता व आवश्यक्ता महसूस की गयी, 20 प्रतिशत लोगों ने इस दौरान विवाह जनेऊ व अन्य धार्मिक संस्कारों में हुए कम खर्च व सादगी को महत्वपूर्ण व आर्थिक बोझ कम करने का उचित माध्यम बतलाया।

सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन की प्रक्रिया में ग्रामीण पर्यावरण एकदम स्वच्छ व सुन्दर रहा इसकी पुष्टि 37.14 प्रतिशत लोगो ने की, मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे या चर्च के बन्द होने से अनावश्यक भीड़ को रोकने के आदेश में कोरोना के प्रकोप से लोगो को बचाने का काम किया। 88.57 प्रतिशत ने घर का भोजन करने से सार्थक परिणामों की पुष्टि की, साथ ही दादी माँ व अन्य पारिवारिक जनों द्वारा परोसे गये भोजन में स्नेह, प्यार अपनापन को महसूस किया। अपने खेत, खलियान, जमीन से जुड़कर बंजर खेतो को हरा–भरा करने का अवसर मिला 31.42 प्रतिशत लोगो ने स्वीकार किया योग ध्यान घर में पूजा पाठ कर मानसिक शान्ति में वृद्धि चिन्ता व घबराहट में कमी आदि को 48.57 प्रतिशत ने तथा घरेलू ईलाज से परम्परागत ज्ञान की उपयोगिता व महत्व को जाना।

निष्कर्ष अतः स्पष्ट है कि कोविड–19 महामारी ने जहॉ प्रत्येक क्षेत्र में घुसबैठ कर व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर नकारात्मकता को जन्म दिया या लोगों पर इसके प्रतिकूल परिणाम परिलक्षित हुए वही यदि देखा जाये तो मानसिक तनाव ,चिन्ता घबराहट को दूर करने, अपनो के महत्व को समझने जीवन में अपनों से बढ़कर कोई नही का एहसास कराने जैसे सकारात्मक प्रभावों को भी व्यक्ति के मन में उत्पन्न किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dictionary.com, Covid-19 Definition & meaning- https://www. dictionary.com.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

2. Johns Hopkins medicine, https://www. hopkins medicine.com.
3. Ram, Bhagat B, et, al. " the Covid-19, migration and livelihood in india: Challenges and policy". Issues migr Lett 17(5), 705-18
4. Gulati, Nalini IDEAS FOR INDIA कोविड–19 लॉकडाउन और घरेलू हिंसा, Nalini Gulati managing editor I4I nalinigulati@the eigc.org
5. Kumar, Ratnesh dksjksuk ce% Corona bomb (COvid-19) (cBook 1) (Hindi edition).
6. Covid-19 BOOK OF FIVE. Respons and containment measures for ANM, ASHA, AWW (Ministry of health and family welfare Govt.of India).
7. साह इला, जोशी ललित, कोविड–19 समाज एवं मीडिया गोल्ज्यू पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स अल्मोड़ा 2021.

*****